उदयपुर (प्रताप नगर)। युवा अध्यक्ष विवेक कटारा को परमात्म अवतरण का संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भूपाल भाई साथ में हैं ब्र.कु.नंदा, एवं ब्र.कु.उर्मिला।

बोरिवली। लेव पटेल समाज के लोगों को 'सर्वश्रेष्ठ आभूषण' विषय पर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीए संचालिका ब्र.कु.दिव्यप्रभा बहन एवं समाज के गणमान्य नागरिक।

सोनगढ़। व्यसन मुक्ति चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए स्वंत्रता सेनानी सम्मुख भाई, बालाभाई, ब्र.कु.पिंकी तथा अन्य।

श्रीविजय नगर। नगरपालिका अध्यक्ष सुशील मिढ्ढा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.वर्षा।

कटनी। 'स्मृति दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए महापौर निर्मला पाठक साथ में हैं पार्षद प्रीति सूरी एवं ब्र.कु.लक्ष्मी।

मलेशिया। 'मम्मा डे' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले ब्र.कु.भाई-बहनें।

भारत और स्वतंत्रता

आज अगर हम किसी से यह पूछें कि 'क्या भारत स्वतंत्र हो गया है?' तो वह आश्चर्यचकित होकर हमें किन्हीं और निगाहों से देखने लगेगा। वह कहेगा, आश्चर्य है, आप ने यह कैसा प्रश्न किया है? आज सारा जमाना इस बात को मानता है और भारत के हर गांव का हर अपठित व्यक्ति भी इस बात को जानता है कि भारत एक स्वतंत्र देश है। आप कैसे विचित्र व्यक्ति हैं कि भारत को स्वतंत्रता मिले 65 वर्षों के बाद भी यह प्रश्न पूछ रहे हैं? भाई, आपने किस रहस्य को मन में रखकर यह प्रश्न किया है? जिस रहस्य से हमने यह प्रश्न किया है, वह रहस्य ही तो जानने योग्य है। जैसे केले के पत्ते के नीचे और कई पत्ते छिपे होते हैं वैसे ही हमारे इस प्रश्न के पीछे और कई प्रश्न छिपे हुए हैं। यह तो ठीक है कि 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से कानूनी तौर पर भारतवासियों को विदेशियों की हुकूमत से स्वतंत्रता मिल गयी परन्तु उससे क्या हुआ? देखना तो यह है कि जिसे सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता कहते हैं, वह मिली या नहीं मिली? अंग्रेजों से स्वतंत्रता पाने के बाद भी आज हम अन्न और धन के लिए दूसरे देशों पर निर्भर हैं। यह बात सभी जानते हैं कि आज यदि अमरीका, आस्ट्रेलिया या केनेडा से भारत में गेहूँ न आये तो हमारे देशवासियों की एक बहुत बड़ी संख्या का जीवन ही खतरे में पड़ जायेगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने विदेशों से इतना ऋण लिया है जो कि हम शायद कभी चुका भी नहीं सकेंगे। देश में बढ़ती हुई अराजकता, उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता को देखकर तो बहुत लोग आज यह मानने लगे हैं कि हमने शायद स्वतंत्रता का गलत अर्थ समझ लिया है। जनता आज जिन्हें प्रतिनिधि चुनकर विधान सभाओं में भेजती है, स्वयं वे एक-दूसरे पर मुक्काबाजी करते, एक-दूसरे पर जूते फेंकते, कुर्सियां उठा-उठा कर एक-दूसरे पर फेंकते हैं। यदि इसी का नाम सम्पूर्ण और सच्ची स्वतंत्रता है तब तो हम निस्संदेह स्वतंत्र हो गये हैं। आज राजनीतिक तौर पर स्वतंत्र होने के बाद भी भारत को सच्ची स्वतंत्रता क्यों प्राप्त नहीं है? विचार करने पर आप इसी निर्णय पर पहुंचेंगे कि इसका एकमात्र कारण यह है कि मनुष्यों में चारित्रिक बल की, मनोबल की, बुद्धि बल की, नैतिक बल की और संगठन शक्ति की कमी है। अत: अब भारत के पुनरुद्धार के लिए ईश्वरीय ज्ञान बल तथा सहज राजयोग बल की आवश्यकता है ताकि उनके विचार उच्च बनें, उनका जीवन सात्विक हो, उनका स्वभाव पवित्र बने और उनका आत्मबल बढ़े तथा विकर्मों की प्रवृत्ति सत्कर्मों की प्रवृत्ति में परिणत हो। आज लोगों ने धर्म से ध्यान हटाकर कर्म को ही प्रधानता दे दी है। उन्होंने परमार्थ को परे फेंक कर केवल व्यवहार को ही अपना लिया है। उन्होंने गृहस्थ को 'आश्रमों' से अलग मानकर, आश्रम अलग बना लिया है। उन्होंने ज्ञान और योग को संन्यासियों की चीज मानकर अज्ञान और भोग से जीवन को नष्ट करना ही अपना कर्त्तव्य मान लिया है। आज गृहस्थ की गाड़ी एक ऐसी गाड़ी बन गई है कि जो पुत्र-परिवार भार से भरी हुई है परन्तु जिसके ज्ञान और योग रूपी बाजू जड़जड़ीभूत होकर टूटने की स्थिति में आ पहुंचे हैं और जिसमें कि परमार्थ रूपी घोड़ा उल्टा जुड़ा है। इसलिए यह गाड़ी चल नहीं रही है, यह सुख और शांति की ओर अथवा स्वर्ग तथा सुखधाम की ओर बढ़ नहीं रही है। सतयुग और त्रेतायुग में तो राजा-रानी और प्रजा के जीवन में 'धर्म' दिव्य गुणों की धारणा के रूप में मौजूद था। उस समय धर्म किन्हीं शास्त्रों में पढ़े जाने वाली, मंदिर या मठों में उपदेश की जाने वाली या पण्डितों से सीखी जाने वाली शिक्षा अथवा क्रिया के रूप में नहीं था। परन्तु वह हर नर-नारी के मन, वचन और कर्म में पवित्रता, सद्व्यवहार और सदाचार के रूप में मौजूद था। बाद में, द्वापरयुग और कलियुग में राजा-रानी तथा प्रजा में पूर्ण पवित्रता तो नहीं थी परन्तु फिर भी धर्म में उनकी अगाध श्रद्धा बनी हुई थी और वे पूजा-भक्ति करने तथा सदाचार की ओर बढ़ने का प्रयत्न करते रहे और धर्माज्ञा के अंकुश को मानते रहे। इस कलिकाल में तो वह सब भी बहुत कम हो गया और इसे 'धर्म-निरपेक्ष राज्य' कहते हैं। मानो कि हम अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के बाद धर्म के बंधन से भी स्वतंत्र हो गए। सतयुग और त्रेतायुग में तो न ऐसी प्रणाली थी और न ही तब की परिस्थिति में इसकी कल्पना ही की जा सकती थी।

अत: 'परमार्थ निकेतन' जो परमपिता परमात्म शिव हैं वह भारतवासियों को सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता देने के लिए अर्थात् मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरदान देने के लिए पुन: इस भारत देश में अवतरित हुए हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के साकार मानवी तन में प्रविष्ट होकर वह उनके मुखारविन्द द्वारा पुन: गीता-ज्ञान की मुरली बजा रहे हैं। वह ऐसा अमूल्य ज्ञान दे रहे हैं जिससे कि विकारों से तप्त आत्मा को शीतलता मिलती है, प्रकृति की परतंत्रता से पीड़ित आत्मा को शांति प्राप्त होती है। इस ईश्वरीय ज्ञानबल, सहज योगबल, अहिंसा बल तथा पवित्रता बल से ही भारत को सच्चे अर्थों में राजनीतिक, आर्थिक तथा आत्मिक स्वतंत्रता मिलेगी।

शरीर ही धर्मक्षेत्र और कुरूक्षेत्र है और इसे जानने वाला क्षेत्रज्ञ

तेरहवें अध्याय में हम देखेंगे कि किस प्रकार ये खेल प्रकृति, पुरुष और परम पुरुष के बीच में चलता है और उससे सम्बन्धित कुछ गुह्य बातें अर्जुन भगवान से पूछता है। जो हम सभी के प्रश्न हो सकते हैं और उन प्रश्नों का समाधान भगवान कैसे करते हैं इसे तेरहवें अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि शरीर क्षेत्र है जिसमें धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र दोनों ही है। पहले अध्याय के पहले श्लोक में जब धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा कि धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र पर क्या हो रहा है? धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र का भाव इस अध्याय में भगवान ने स्पष्ट किया है कि जिसमें धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र दोनों ही हैं। शरीर को ही क्षेत्र कहा, जहाँ धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र दोनों ही है। जब शरीर रूपी क्षेत्र में दैवी संस्कारों का प्रभाव अधिक होता है तब वह धर्मक्षेत्र बन जाता है। जब आसुरी संस्कारों का प्रभाव कर्मेइन्द्रियों पर पड़ता है, तब यही संघर्ष का एक क्षेत्र, कुरुक्षेत्र बन जाता है।

पहले श्लोक से लेकर 12 वें श्लोक तक धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का यथार्थ ज्ञान दिया गया है। 13 वें श्लोक से लेकर 19 वें श्लोक तक परमपुरुष परमात्मा का यथार्थ ज्ञान दिया गया है और 20 वें श्लोक से लेकर 35 वें श्लोक तक पुरुष और प्रकृति का संयोग बताया गया है कि किस प्रकार ये खेल में दोनों की ही आवश्यकता होती है। अर्जुन का पहला सवाल यही है कि प्रकृति, पुरुष क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ क्या है? जब दिव्य दृष्टि के आधार से परमात्मा का सत्य स्वरूप स्पष्ट हो गया तो उसको

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

जानने की जिज्ञासा और तीव्र हो गयी, जो गुह्य से गुह्य रहस्य वाली बातें हैं, वह वो सभी जानना चाहता है। तब परमात्मा ने बताया कि शरीर ही क्षेत्र है, उसे जानने वाला क्षेत्रज्ञ है। परमात्मा ही सभी क्षेत्रों का ज्ञाता है, यही वास्तव में यथार्थ ज्ञान है। इसे और स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि पंच महाभूत, अहंकार युक्त मन और बुद्धि, दसों इन्द्रियां इसमें भी पाँच इंद्रियां विशेष - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध और इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख संघात तथा जीवन के लक्षण इन सबको कर्म का क्षेत्र कहा जाता है अर्थात् ये कुरुक्षेत्र है। जिसमें बोया हुआ भला व बुरा बीज संस्कार के रूप में नित्य उगता रहता है। मनुष्य जैसा कर्म करता है, उस अनुसार ही उसका संस्कार बनता है। जैसे कहा गया कि कर्म आत्मा के ऊपर अपना प्रभाव छोड़ देता है। जिस प्रभाव को ही दूसरे शब्द में 'संस्कार' कहा जाता है। हर मनुष्य के अंदर पांच प्रकार के मुख्य संस्कार होते हैं -

पहला संस्कार है - ओरिजनल संस्कार। ओरिजनल संस्कार अर्थात् सतोगुण के संस्कार। जब आत्मा अव्यक्त से व्यक्त रूप में इस संसार के क्षेत्र पर आती है, तो उस समय उसके सतोगुणी संस्कार होते हैं। जो आत्मा के सात गुण हैं या दूसरे शब्दों में कहें कि उनकी बैट्री पूर्ण रूप से चार्ज होती है। लेकिन इस संसार में आने के बाद धीरे-धीरे वो अपनी वास्तविकता को भूलने लगती है और इस संसार के अंदर से कई प्रकार के विषयों से वशीभूत होने लगती है। जो आत्मा के सात गुणों से भरपूर संस्कार थे, वे धीरे-धीरे लुप्त होकर के इस दुनिया के बुराईयों के प्रभाव के आधार पर संस्कार बनने लगते हैं। विशेषकर अज्ञानता और अहंकार से युक्त उसके कर्म होने लगते हैं। उस कारण से उसके अंदर वो संस्कार विशेष रूप से विकसित होने लगते हैं।

दूसरे प्रकार के संस्कार है - पूर्वजन्म के संस्कार। कोई आत्मा कहाँ से आई, कोई आत्मा कहाँ से आई तो उस जन्म के संस्कार को भी साथ ले आती है। जो कई बार दिखाई भी देता है कि कोई तीन साल का बच्चा है और कम्प्यूटर चलाने लग गया। पाँच साल का बच्चा है शास्त्र का श्लोक बोलने लग गया तो कहते हैं कि उसके पूर्व जन्म के संस्कार उदय हो गये। अब क्या उसी में उदय हुए बाकी सब में नहीं हुए। उदय हरेक में होते हैं। लेकिन इंटेनसिटी में फर्क पड़ता है। किसी में बहुत तीव्र इंटेनसिटी से वो बाहर प्रगट हो जाते हैं। जिसका प्रभाव स्पष्ट रूप में दिखाई देता हैं। लेकिन किसी-किसी में स्लो इंटेनसिटी से बाहर प्रगट होते हैं। तब वो दिखाई नहीं पड़ते, लेकिन वो बीच-बीच में वर्तमान कर्म के साथ इंटरफियर अवश्य करता है। जो कभी-कभी इंसान खुद भी समझ नहीं पाता है कि मैं ऐसे क्यों कर रहा हूँ? - क्रमश: